फेग शुई के स्वास्थ्य संबंधी उपाय

इस संसार में पैसा और हीरे जवाहरात इंसान को अच्छा स्वास्थ्य खरीद कर नही दे सकते। अच्छे स्वास्थ्य के बिना आप खुशियों का भरपूर आनंद नहीं ले सकते। व्यक्ति के लिए स्वास्थ्य सबसे महत्वपूर्ण होता है। यदि व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा है तो सब कुछ ठीक है। फेंगशुई में स्वस्थ व तंदरूस्त रहने के लिए कई आसान उपाय बताये गये हैं। स्वस्थ व तंदरूस्त रहने के यह उपाय हैं।

1. अगर आप अपना स्वास्थ्य सुधारना चाहते हैं तो हमेशा अपनी निजी शुभ दिशा की ओर सिर करके सोएं। यह शुभ दिशा आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक हैं।
2. शीशे की तरफ मुंह करके ना सोएं। यह आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। इसके अलावा सोते समय सामने दर्पण या वाटर प्लांट, एक्वेरियम, झील और नदी की पेंटिंग नहीं होनी चाहिए।
3. उस कमरे में ना सोएं जिसके ऊपर टॉयलेट या वाशिंग मशीन स्थित हैं।
4. घर में लगे बीम के नीचे न सोएं क्योंकि यह सिरदर्द का कारण होता है।
5. एक लंबे गलियारे के अंत में स्थित कमरे में सोने से बचें या एक कमरा जिसका दरवाजा सीधे सीढियो की तरफ खुलता हैं। ऊर्जा का मजबूत प्रवाह कमरे में रहने वालों के लिए बीमारी लाने वाला साबित होगा।
6. कमरे के तेज किनारों और आगे को निकलने वाले कोनों को भी देखे जो कमरे में हानिकारक जहर के तीर भेजने का काम करते हैं।
7. अपने घर के पूर्वी भाग को विशेष रूप से ऊर्जावान बनाएं, क्योंकि यह क्षेत्र स्वास्थ्य और दीर्घायु का प्रतिनिधित्व करता है।

जब भगवान शिव की हुई जलती लकडी से पिटाई

देवों में देव महादेव की कोई जलती लकड़ी से पिटाई करे ऐसा कोई सोच भी नहीं सकता लेकिन, यह बात बिल्कुल सच है। बात कुछ 1360 ई. के आस-पास की है। उन दिनों बिहार के विस्फी गांव में एक कवि हुआ करते थे। कवि का नाम विद्यापति था। कवि होने के साथ-साथ विद्यापति भगवान शिव के अनन्य भक्त भी थे। इनकी भक्ति और रचनाओं से प्रसन्न होकर भगवान शिव को इनके घर नौकर बनकर रहने की इच्छा हुई।

भगवान शिव एक दिन एक जाहिल गंवार का वेष बनाकर विद्यापति के घर आ गये। विद्यापति को शिव जी ने अपना नाम उगना बताया। विद्यापति की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी अत: उन्होंने उगना को नौकरी पर रखने से मना कर दिया। लेकिन शिव जी मानने वाले कहां थे। सिर्फ दो वक्त के भोजन पर नौकरी करने के लिए तैयार हो गये। इस पर विद्यापति की पत्नी ने विद्यापति से उगना को नौकरी पर रखने के लिए कहा। पत्नी की बात मानकर विद्यापति ने उगना को नौकरी पर रख लिया।

एक दिन उगना विद्यापति के साथ राजा के दरबार में जा रहे थे। तेज गर्मी के वजह से विद्यापति का गला सूखने लगा। लेकिन आस-पास जल का कोई स्रोत नहीं था। विद्यापति ने उगना से कहा कि कहीं से जल का प्रबंध करो अन्यथा मैं प्यासा ही मर जाऊंगा। भगवान शिव कुछ दूर जाकर अपनी जटा खोलकर एक लोटा गंगा जल भर लाए।

विद्यापति ने जब जल पिया तो उन्हें गंगा जल का स्वाद लगा और वह आश्चर्य चकित हो उठे कि इस वन में जहां कहीं जल का स्रोत तक नहीं दिखता यह जल कहां से आया। वह भी ऐसा जल जिसका स्वाद गंगा जल के जैसा है। कवि विद्यापति उगना पर संदेह हो गया कि यह कोई सामान्य व्यक्ति नहीं बल्कि स्वयं भगवान शिव हैं अत: उगना से उसका वास्तविक परिचय जानने के लिए जिद करने लगे।

जब विद्यापति ने उगना को शिव कहकर उनके चरण पकड़ लिये तब उगना को अपने वास्तविक स्वरूप में आना पड़ा। उगना के स्थान पर स्वयं भगवान शिव प्रकट हो गये। शिव ने विद्यापति से कहा कि मैं तुम्हारे साथ उगना बनकर रहना चाहता हूं लेकिन इस बात को कभी किसी से मेरा वास्तविक परिचय मत बताना।

विद्यापति को बिना मांगे संसार के ईश्वर का सानिध्य मिल चुका था। इन्होंने शिव की शर्त को मान लिया। लेकिन एक दिन विद्यापति की पत्नी सुशीला ने उगना को कोई काम दिया। उगना उस काम को ठीक से नहीं समझा और गलती कर बैठा। सुशीला इससे नाराज हो गयी और चूल्हे से जलती लकड़ी निकालकर लगी शिव जी की पिटाई करने। विद्यापति ने जब यह दृश्य देख तो अनायास ही उनके मुंह से निकल पड़ा 'ये साक्षात भगवान शिव हैं, इन्हें जलती लकड़ी से मार रही हो।' फिर क्या था, विद्यापति के मुंह से यह शब्द निकलते ही शिव वहां से अर्न्तध्यान हो गये।

इसके बाद तो विद्यापति पागलों की भांति उगना - उगना कहते हुए वनों में, खेतों में हर जगह उगना बने शिव को ढूंढने लगे। भक्त की ऐसी दशा देखकर शिव को दया आ गयी। भगवान शिव उगना के सामने प्रकट हो गये और कहा कि अब मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता। उगना रूप में मैं जो तुम्हारे साथ रहा उसके प्रतीक चिन्ह के रूप में अब मैं शिव लिंग के रूप विराजमान रहूंगा। इसके बाद शिव अपने लोक लौट गये और उस स्थान पर शिव लिंग प्रकट हो गया। उगना महादेव का प्रसिद्ध मंदिर वर्तमान में मधुबनी जिला में भवानीपुर गांव में स्थित है।

जब संत ने दिया सुख का मंत्र

एक राजा था। वह बडा निडर और उदार था। उसकी प्रजा उसे बहुत चाहती थी। एक दिन राजा एकांत में बैठा सोच रहा था। सोचते-सोचते वह गहराई में उतर गया। उसे लगा, इतनी सारी सुख-निधि पाकर भी आदमी दु:खी क्यों है। एक दिन उसने अपने दरबारियों को आज्ञा दी कि सबसे सुखी और तन्दुरूस्त आदमी को पकड कर लाओ। दरबारी और प्रजा हैरान। वे राजा की आज्ञा का पालन करने के लिए बहुत भटके, पर राजा जैसा चाहता था, वैसा एक भी आदमी नहीं मिला। उन्होंने दरबार में आकर राजा से कहा, 'हे राजन इस धरती पर पूर्ण सुखी और स्वस्थ कोई भी इंसान नहीं है। किसी को कोई दुख है तो किसी को कोई।' सुनकर राजा स्तब्ध रह गया। फिर बोला, 'तो क्या मेरे राज्य में सब दुखी और बीमार हैं। इस धरती पर कोई भी सुखी नहीं है। नहीं, ऐसा हो नहीं सकता। जाओ, एक बार फिर खोजो।' दरबारी क्या करते! फिर निकले। घूमते-घूमते वे एक निर्जन और वीरान जंगल से गुजरे। देखा, एक संत ध्यान में लीन हैं। वे वहीं जाकर बैठ गए।

ध्यान खुलने पर संत ने पूछा, 'तुम लोग कौन हो। कहां से आए हो।' दरबारियों ने कहा, 'हम राजा की आज्ञा मानकर सबसे सुखी और स्वस्थ प्राणी को खोजने निकले हैं।' सुनकर संत बोले, 'क्या तुम्हें अब तक ऐसा कोई आदमी मिला है।' दरबारियों ने कहा, 'नहीं' इसके बाद साधु उनके साथ राजा के पास गए। राजा संत को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। संत ने कहा, 'राजन! तुम व्यर्थ ही परेशान होते हो। क्या तुम्हें पता है कि मनुष्य के ह्रदय में ही सुख का अपार भंडार भरा पडा है। जरा टटोलो तो अपने को। सुख की खोज में जैसे कस्तूरी मृग इधर-उधर भटकता है, वैसे ही तुम भटक रहे हो। सुख के लिए बाहर नहीं, भीतर देखना होता है।' राजा का ह्रदय पुलक उठा। उसकी समस्या हल हो गई। चूहा और गिलहरी एक था चूहा, एक थी गिलहरी। चूहा शरारती था। दिन भर 'चीं-चीं' करता हुआ मौज उड़ाता। गिलहरी भोली थी। 'टी-टी' करतीं हुई इधर-उधर घूमा करती।

संयोग से एक बार दोनों का आमना-सामना हो गया। अपनी प्रशंसा करते हुए चूहे ने कहा, 'मुझे लोग मूषकराज कहते हैं और गणेशजी की सवारी के रूप में खूब जानते हैं। मेरे पैने-पैने हथियार सरीखे दांत लोहे के पिंजरे तो क्या, किसी भी चीज को काट सकते हैं।' मासूम-सी गिलहरी को यह सुनकर बहुत बुरा लगा। बोली, 'भाई, तुम दूसरों का नुकसान करते हो, फायदा नहीं। यदि अपने दांतों पर तुम्हें इतना गर्व है, तो इससे कोई नक्काशी क्यों नहीं करते। इनका उपयोग करो तो जानूं। जहां तक मेरा सवाल है, मुझमें तुम सरीखा कोई गुण नहीं है।

मेरे बदन पर तीन धारियां देख रहे हो न, बस ये ही मेरी खास चीज है। जो दाना-पानी मिल जाता है, उसका कचरा साफ करके संतोष से खा लेती हूं।' चूहा बोला, 'तुम्हारी तीन धारियों की विशेषता क्या है।' गिलहरी बोली, 'वाह! तुम्हें पता नहीं। आसपास दो काली धारियां हैं, उनके बीच में एक सफेद है। इनका मतलब है कि कठिनाइयों की परतों के बीच से ही असली सुख झांकता है। दो काली अंधेरी रातों के बीच में ही एक सुनहरा दिन छिपा रहता है।'

बाल भी बताते हैं व्यक्ति के गुण, स्वभाव और मनोवृति

बालों के रूप में मस्तिष्क के विचार भी प्रकट होते है। बालों को देखकर आप किसी व्यक्ति के गुण, स्वभाव और उसकी मनोवृति को आसानी से जान सकते हैं।

सीधे बाल वाले व्यक्ति स्पष्टवादी, सरल और खुले दिल के होते हैं। घुंघराले बाल वाले व्यक्तियों में निर्णय लेने की क्षमता का अभाव होता है। घुंघराले बाल वाले धैर्यहीन, संकोची और अस्थिर होते हैं। लहरदार बालौं लोग मनमौजी, अतिक्रोधी, कर्मठ, कामुक, मतलबी और परिवर्तनशील होते हैं। ऐसे लोगों का मन हर क्षण बदलता रहता है।

रूखे बाल निम्नकोटि की मानसिक बौद्धिक क्षमता का प्रतिक हैं।

ऐसे लोग व्यवहार से कठोर और अल्पबुद्धि होते हैं। नरम एवं पतले बाल वाले मन से शुद्ध, सरल, भावुक, अबोध व निर्मल दिल के होते हैं। ऐसे व्यक्तियों का स्वभव बच्चों की तरह सरलहोता है।

ऐसे व्यक्ति उच्चा कोटी के कलाकार, दार्शनिक या समाज सेवक हो सकते हैं। मोटे बालों व्यक्ति में जीवनी शक्ति की प्रचुरता, कठोर परिश्रम करने वाले और धैर्यवान होते हैं। ऐसे व्यक्ति इरादे के पक्के और खान-पान के शौकीन होते हैं।

मानसिक शांति के लिए कीजिए यह व्रत

हिंदू पंचांग में भाद्रपद माह की अमावस्या तिथि को कुशोत्पाटिनी अमावस्या के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष यह एकादशी 12 सितंबर के दिन है। इस एकादशी को कुशग्रहणी अमावस्या भी कहते हैं। इस दिन वर्ष भर किए जाने वाले धार्मिक कार्यों तथा श्राद्ध आदि कार्यों के लिए कुश (एक विशेष प्रकार की घास, जिसका उपयोग धार्मिक कार्यों में किया जाता है) एकत्रित किया जाता है। शास्त्रों में दस प्रकार के कुशों का वर्णन मिलता है।

कुशा: काशा यवा दूर्वा उशीराच्छ सकुन्दका:। गोधूमा ब्राहमयो मौन्जा दश दभा : सबल्वजा:।।

कुशोत्पाटिनी एकादशी का महत्व

हिंदू पौराणिक ग्रंथों में अमावस्या तिथि का स्वामी पितृदेव को माना जाता है। इसलिए इस दिन पितरों की तृप्ति के लिए तर्पण, दान-पुण्य का महत्व है।

जब अमावस्या के दिन सोमवार, मंगलवार और गुरुवार के साथ जब अनुराधा, विशाखा और स्वाति नक्षत्र का योग बनता है, तो यह बहुत पवित्र योग माना गया है।

यह मिलता है फल

कुशाग्रहणी अमावस्या के दिन तीर्थ, स्नान, जप, तप और व्रत के पुण्य से ऋण और पापों से छुटकारा मिलता है। इसलिए यह संयम, साधना और तप के लिए श्रेष्ठ दिन माना जाता है। यह व्रत एक वर्ष तक किया जाता है। जिससे मानसिक शांति मिलती है।

जब श्रीकृष्ण पर लगा चोरी का आरोप

एक दिन सत्राजित भगवान सूर्य द्वारा प्रदत्त स्यमंतकमणि धारणकर श्रीकृष्ण से मिलने आए। मणि के प्रकाश को देखकर यदुवंशी बोले- 'हे कृष्ण, यह मणि तो राजा उग्रसेन जी को अच्छी लगेगी। अत: आप यह मणि लेकर राजा उग्रसेन को दे दें। श्रीकृष्ण ने भी हंसकर सत्राजित से कहा- 'सत्राजित, तुम यह मणि हमारे राजा को दे दो।' परंतु यह सुनकर सत्राजित सभा से उठकर चले गए।

घर पहुंचकर सत्राजित ने भाई प्रसेनजित को सारा प्रसंग कह सुनाया। प्रसेनजित मणि पहनकर शिकार खेलने के लिए जंगल में चले गए। जंगल में एक मृग का पीछा करते-करते प्रसेनजित एक ऐसी गुफा में पहुंच गए, जहां घोर अंधेरा था। गुफा में शेर रहता था। उस शेर ने प्रसेनजित पर हमला करके उसे मार दिया और मणि गुफा में ले गया। मणि के प्रभाव के कारण गुफा सूर्य की तरह जगमगा उठी।

वहीं जामवंत निवास कर रहे थे। जब उन्हें गुफा में मणि होने की बात पता चली, तो उन्होंने शेर को मारकर मणि प्राप्त कर ली और मणि को अपनी बेटी के पालने से बांध दिया। उधर प्रसेनजित के साथ जो लोग शिकार खेलने गए थे, उन्होंने लौटकर सत्राजित को प्रसेनजित के लापता होने का हाल कह सुनाया। सत्राजित का शक सीधा श्रीकृष्ण पर गया कि मणि न देने पर उन्होंने ही उनके भाई को मारा है।

भाई के शोक में सत्राजित को उदास देखकर उनकी पत्नी ने पूछा, तो सत्राजित ने अपने मन की बात पत्नी को बता दी। सत्राजित की पत्नी ने यह बात अपनी पड़ोसन से कह दी। पड़ोसन से यह बात आगे फैलने लगी। फैलते-फैलते यह बात भगवान श्रीकृष्ण तक भी पहुंच गई। तब श्रीकृष्ण ने स्वयं पर लगा यह लांछन दूर करने के लिए प्रण किया कि वह सारा भेद स्पष्ट करेंगे तथा मणि को वापस लेकर आएंगे।

वह दल-बल सहित मणि की तलाश में निकल पड़े। रास्ते में उन्हें घोड़े के पैरों के चिह्न दिखाई दिए।

आगे जाने पर घोड़े व प्रसेनजित का शव भी मिल गया। वहीं पर सिंह के पैरों के निशान देखकर सबने अंदेशा जताया कि यह सब सिंह ने किया है। सिंह के पैरों के निशानों के पीछे-पीछे श्रीकृष्ण गुफा में चले गए। वहां पर सिंह भी मरा मिला, परंतु मणि नहीं मिली।

श्रीकृष्ण गुफा में भीतर पहुंचे तो जामवंत की पत्नी डरकर चिल्लाने लगी। फिर जामवंत व श्रीकृष्ण में घोर युद्ध हुआ। जब जामवंत श्रीकृष्ण को पराजित न कर पाए, तो उन्होंने मन ही मन प्रभु श्रीराम का स्मरण किया।

भगवान श्रीकृष्ण ने जामवंत को श्रीराम के स्वरूप में दर्शन दिए। भगवान के दर्शन करके वह धन्य हुए तथा उन्होंने मणि व अपनी पुत्री श्रीकृष्ण को सौंपकर उनसे क्षमा मांगी। श्रीकृष्ण ने वह स्यमंतकमणि सत्राजित को वापस करके स्वयं पर लगा कलंक धोया।

घर में शांति के लिए रखें गुलदस्ता

बदलते दौर में वास्तु का महत्व दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। आजकल कई बड़े-बड़े बिल्डर व इंटीरियर डेकोरेटर भी घर बनाते व सजाते समय वास्तु का विशेष ध्यान रखते हैं। वास्तु के अनुसार ही वे कमरे की बनावट, उनमें सामान की साज-सज्जा करते हैं। इससे घर की खूबसूरती बढ़ने के साथ-साथ सकारात्मक ऊर्जा का भी प्रवाह होता है। वास्तु के अनुसार घर की सजावट करते समय निम्न बातों का ध्यान रखें—

- घर के प्रवेश द्वार पर स्वास्तिक अथवा ॐ की आकृति लगाने से घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहती है।
- जिस भूखंड या मकान पर मंदिर की पीठ पड़ती है, वहां रहने वाले आए-दिन आर्थिक व शारीरिक परेशानियों में घिरते रहते हैं।

- समृद्धि की प्राप्ति के लिए नॉर्थ-ईस्ट दिशा में पानी का कलश अवश्य रखना चाहिए।
- घर में ऊर्जामय वातावरण बनाने में सूर्य की रोशनी का विशेष महत्व होता है, इसलिए घर की आंतरिक साज-सज्जा ऐसी होनी चाहिए कि सूर्य की रोशनी घर में पर्याप्त रूप में प्रवेश करे।
- घर में कलह अथवा अशांति का वातावरण हो, तो ड्राइंग रूम में फूलों का गुलदस्ता रखना अच्छा रहता है।
- अशुद्ध वस्त्रों को घर के प्रवेश द्वार के मध्य में नहीं रखना चाहिए।
- वास्तु के अनुसार रसोईघर में देवस्थान नहीं होना चाहिए।
- गृहस्थ के बेडरूम में भगवान के चित्र अथवा धार्मिक महत्व की वस्तुएं नहीं लगी होनी चाहिएं।
- घर में देवस्थान की दीवार से शौचालय की दीवार का संपर्क नहीं होना चाहिए।